जल को यूं ही बर्बाद न करें

उन्हें पाटकर उन पर बड़े-बड़े भवन खड़े कर दिए अथवा कृषिफार्म बना लिए। अब सरकार को चाहिए कि पुराने तालाबों को चिन्हित कर उन्हें खाली करा कर खुदाई कराए तथा पुनः तालाब का स्वरूप प्रदान करे। बचत की भूमियों का उपयोग कर कुछ नए तालाबों को भी जन्म दे तथा वर्षाकाल में उनमें वर्षाजल का संचय करें। जल को बर्बाद होने से रोका जाए। तालाब भूजल का तो पुनर्भरण करते ही हैं, जीव-जंतु, पशु-पक्षी आदि जंगली जीवों को आश्रय भी प्रदान करते हैं।

वर्षाकाल में कुछ क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित होते हैं। बाढ़ से असंख्य धन, जन, सम्पत्ति एवं कृषि फसलों का विनाश हो जाता है साथ ही अपार जलराशि बहकर समुद्र में चली जाती है। दोनों प्रकार से हानि ही हानि है। इस क्षेत्र में सरकार को ही कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसे क्षेत्रों में नदियों पर बांध बनाकर भारी मात्रा में जल शोधन यंत्र लगाए जाए और उनसे शुद्ध हुए जल का संबंध जल विहीन क्षेत्रों से किया जाए। जल को पीने योग्य बनाकर देश के उन समस्त क्षेत्रों तक पाइप लाइनों द्वारा पहुंचाया जाए जहां जल का अभाव है। साथ ही ऐसे क्षेत्रों में निवास करने वाले हर परिवार पर यह कानूनी दबाव हो कि वे अपने घरों में जल संचय की व्यवस्था करें। इसके लिए घर के फर्श के नीचे एक विशाल पक्का/कच्चा टैंक भी बनाया जा सकता है जो पूर्णरूप से सुरक्षित एवं ढका हुआ हो। संचय से अधिक जल यदि प्राप्त हो तो उसका संबंध भी भूगर्भ से कर दिया जाए। इस प्रकार संपूर्ण देश में पर्याप्त जल भी उपलब्ध होगा, पुनर्भरण भी होगा और बाढ़ रोकने में भी सहायक होगा। जल शोधन के उपरांत जो अधिक लवणों वाला कचरा युक्त अवशेष जल बचे उसे ही समुद्र तक जाने दिया जाए।

यदि हम ऐसी व्यवस्था बनाने में सफल होते हैं तो यह दावे के साथ कहा जा सकता है, कि पेयजल की समस्या को समाप्त किया जा सकता है। एक असंभव से लग रहे कार्य को संभव बनाया जा सकता है। भूगर्भ के जल का यह पुनर्भरण, मृत्यु के मुंह पर खड़े समस्त प्राणी जगत के लिए पुनर्जीवन का स्वरूप धारण कर सकता है।

संपर्क करें:
आचार्य राकेश बाबू 'ताबिश'
द्वारिकापुरी,
कोटला रोड मंडी समिति के सामने
फ़ीरोज़ाबाद, उत्तर प्रदेश - 283203

कृत्रिम ताल भूजल पुनर्भरण के उत्तम साधन है

जल और जीवन

जल को रोको यह कभी बरबाद न होने पाए,
संचय कर लो जल को यह हाथ से छूट न जाए।
अस्तित्व हमारा जल से उससे हमारा जीवन है,
जल बिन यह जीवन कानन निर्जन न हो पाए।
जल रोको यह कभी बरबाद न होने पाए...

हरी-भरी धरती भी लगती उपवन भी सुंदर लगता,
पानी से नदियों का जल भी कल-कल करके बहता।
मछली, कछुए, सिपी आदि जीव-जंतु भी जीवित रहते,
धरती का आंगन किलकारी से वंचित न हो जाए।
जल रोको यह कभी बरबाद न होने पाए...

फैलता प्रदूषण का खतरा जल पर भी संकट होगा,
रोका नहीं अभी इसे तो जल थल अंबर दूषित होगा।
कूड़ा-करकट जल में ना डाली वरना बीमारी फैलेगी,
खिलते फूलों की बगिया भी दूषित न होने पाए।
जल रोको यह कभी बरबाद न होने पाए...

चेहरे पर मुस्कानें हो, जिसके चेहरे पर पानी होता है,
पानी की अनदेखी से सारा जग ही मरूस्थल होता है।
जल की लापरवाही से अपने सपने धूमिल होंगे,
मिलकर आओ प्रण करें हम सब जल का संचय भी हो जाए।
जल रोको यह कभी बरबाद न होने पाए...

संपर्क करें:
कमल सिंह चौहान
'कवि एवं मंच संचालक'
कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास
रेलवे स्टेशन रोड़ बीड, जिला खंडवा (मध्य प्रदेश) 450 110